प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।

सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः ।।18।।

अन्वय स प्रजानां भूत्यर्थमेव ताभ्य बलिम् अग्रहीत्, हि रविः सहस्रगुणम् उत्स्रष्टुं रसम् आदत्ते।

अनुवाद जिस प्रकार सूर्य हजार गुना बढ़कर (वापस) देने के लिए ही (पृथ्वी से) रस (जल)खींचता है, उसी प्रकार राजा दिलीप भी प्रजा के कल्याण के लिए ही उससे कर लेते थे।

टिप्पणियां

बलिम् कर, शुल्क, टैक्स। हिंदुओं के अर्थशास्त्र के अनुसार उपज का छठा भाग राजा का भाग माना गया है जिसे हजार गुना करके वह अपने सुख और आराम पर व्यय न कर प्रजा के कल्याण के कार्यों (कुएं खुदवाना, अस्पताल खोलना आदि) पर व्यय करता है।

उत्स्रष्टुम् उत् उपसर्ग धातु सृज् तुमुन्, वापस दे देने के लिए लौटा देने के लिए।

सहस्रगुणम् हजार गुना। जिस प्रकार सूर्य भगवान जिस जल को पृथ्वी आदि से सुखाकर ले लेते हैं, उसी को सहस्त्रगुणम् कर पुनः वर्षा के रूप में लौटा देते हैं, ठीक उसी प्रकार महाराजा दिलीप भी प्रजा द्वारा दिये गये कर को हजार गुना कर प्रजा के कल्याण के लिए लगा देते थे। **''त्यागाय सम्भृतार्थानाम्।''** (रघुवंशम्)

रसम् जल